दिल्ली दौरे में मुख्यमंत्री ने अमित शाह, पाटिल व शिवराज सिंह से मुलाकात की

उन्होंने कानून व्यवस्था, विकास परियोजनाओं, जल प्रबंधन, पेय जल व सिंचाई पर चर्चा की

जयपुर, 18 नवंबर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा बुधवार को नई दिल्ली के दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह सहित, केन्द्र सरकार के कई वरिष्ठ मंत्रियों से मुलाकात की और राजस्थान से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। मुख्यमंत्री की इन मुलाकातों में प्रदेश की कानून-व्यवस्था को मजबूत बनाने, विकास योजनाओं को गति देने, जल प्रबंधन, पेयजल उपलब्धता और सिंचाई सुविधाओं के विस्तार जैसे मुद्दे प्रमुख थे।

- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के निवास पर उनकी माताजी के निधन पर शोक व्यक्त किया।**



मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को नई दिल्ली में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, केंद्रीय जलशक्ति मंत्री सीआर पाटिल व केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात की।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने नई दिल्ली में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह से मुलाकात कर उनसे मार्गदर्शन लिया। दोनों नेताओं के बीच प्रदेश की कानून-व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाने, राजस्थान के समग्र विकास को नई गति देने तथा जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर चर्चा हुई।

इससे पहले, मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री सीआर पाटिल से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान, राजस्थान में जल प्रबंधन, पेयजल उपलब्धता और सिंचाई सुविधाओं के विस्तार से जुड़े विषयों पर चर्चा हुई। प्रदेश में जल संसाधनों के बेहतर उपयोग, पेयजल व्यवस्था को मजबूत बनाने और किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध कराने से जुड़े मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान के आवास पर पहुंचकर उनकी माताजी काशी बाई के निधन पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने शोकाकुल परिवार के प्रति संवेदनाएं प्रकट करते हुए, दिवंगत आत्मा को श्रीचरणों में स्थान देने तथा परिजनों को इस कठिन समय में दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

हीराबेन ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

या भाजपा की राष्ट्रीय स्तर की आधिकारिक परियोजना नहीं है, बल्कि स्थानीय स्तर पर शुरू की गई एक धर्मार्थ पहल है, जिसमें भाजपा के नेता भी शामिल हैं। ओडिशा के संबलपुर, और हाल ही में आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम में महात्मा गांधी के मंदिर बनाए गए हैं। तमिलनाडु में एम.जी. रामचंद्रन के मंदिर भी कई दशकों से मौजूद हैं।

राजनीतिक नेताओं और फिल्मी सितारों को भगवान का दर्जा देने की यह परंपरा खास तौर पर भारत में देखने को मिलती है, हालांकि इतिहास में इसके उदाहरण दूसरे देशों में भी रहे हैं। मिस्र के फैरो और रोमन सम्राटों की भी पूजा की जाती थी। वहीं, हाल के समय में, उत्तर कोरिया में किम परिवार के सदस्यों के सम्मान में मूर्तियां और स्मारक बनाए गए हैं।

'दो सप्ताह में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

है। उन्होंने अदालत को आश्वस्त किया कि दो सप्ताह में अध्यक्ष पद पर नियुक्ति दे दी जाएगी।

अगले कुछ दिन चीन के शहर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चीनियों ने एलिस के जरिए जेनसेन को फंसाकर इन गोपनीय और अत्यधिक सुरक्षित एडवांस्ड ए.आई. चिप्स को हासिल कर लिया, जो उनके लिए एक बड़ी जीत साबित हुई है। इसके बाद अमेरिकी काफी बेवकूफ नज़र आ रहे हैं। लेकिन क्या डॉनल्ड ट्रंप चीनी राष्ट्रपति के साथ अपनी बातचीत में यह मुद्दा उठा पाएंगे? शी जिनपिंग के सामने डॉनल्ड ट्रंप अक्सर खुलकर और मजबूती से बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते, इसलिए संभावना यही है कि वे इस मुद्दे को ज्यादा महत्व नहीं देंगे। असल में, यह सब एक-दूसरे के धैर्य और हौसले को परखने का खेल है।

इन तीनों देशों के आपसी रवैये और बातचीत का महत्व कितना बड़ा है, इसे जितना बड़ा-चढ़ाकर बताया जाए वो कम होगा। दुनिया की 90 प्रतिशत परमाणु ताकत ओर मिसाइलें इनके पास हैं। ये तीनों देश दुनिया की अधिकांश सैन्य ताकत का प्रतिनिधित्व करते हैं और विभिन्न वैश्विक मुद्दों पर इनके विचार पूरी दुनिया का रुख प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।

हालांकि, इनके बीच कई बातों पर मतभेद भी हैं और कई मामलों में तो इनके हित एक-दूसरे से सीधे टकराते हैं। आइए, इन बड़ी शक्तियों के लिए सबसे शर्मनाक माने जाने वाले मुद्दे पर नज़र डालते हैं। चीन और रूस, दोनों ईरान के लगातार संपर्क में हैं। उन्होंने ईरान को ऐसी महत्वपूर्ण भू-स्थानिक (जिओ-स्पेशियल) जानकारियां उपलब्ध कराई हैं, जिन्होंने मौजूदा ईरान युद्ध के दौरान अमेरिकियों को शर्मिंदा कर दिया है। ईरानियों को मिली इस तरह की रणनीतिक जानकारियों के कारण मध्य पूर्व में अमेरिका के कुछ बेहद महत्वपूर्ण सैन्य संसाधन नष्ट हो गए। इनमें युद्ध क्षेत्रों में अमेरिकी वायुसेना की ताकत को हुआ भारी नुकसान और विनाश भी शामिल है। अमेरिका के कुछ सबसे बड़े विमान, जिन्हें "आसमान के किले" कहा जाता है, जमीन पर ही नष्ट कर दिए गए।

दूसरी ओर, अमेरिका ने भी यूक्रेन को कई बार महत्वपूर्ण खुफिया जानकारियां उपलब्ध कराई हैं, जिससे रूस के हितों को नुकसान पहुंचा है। माना जाता है कि रूस के प्रसिद्ध काला सागर नौसैनिक बेड़े के बारे में अमेरिकी खुफिया जानकारियों की मदद से यूक्रेन रूस के बेहतरीन युद्धपोतों को नष्ट करने में सफल रहा।

हाल ही में यूक्रेन ने रूस के उस प्रसिद्ध पुल को भी नष्ट कर दिया, जो रूस की मुख्य भूमि को यूक्रेन के उन क्षेत्रों से जोड़ता था, जिन्हें रूस ने हाल ही में अपने नियंत्रण में लिया था। इस प्रसिद्ध पुल की मरम्मत करके उसे फिर से चालू कर दिया गया था। लेकिन यूक्रेन कई बार इस पुल के हिस्सों को नष्ट करने में सफल रहा, जिससे इसकी उपयोगिता काफी सीमित हो गई है।

इन सबके अलावा, अमेरिका ने यूक्रेन को पैट्रियट मिसाइलों की सबसे प्रभावी प्रणालियां भी उपलब्ध कराई हैं। इससे रूस की सैन्य स्थिति और उसके आक्रामक अभियानों को गंभीर नुकसान पहुंचा है।

यह स्पष्ट है कि भले ही ऊपर से सब कुछ आपसी शिष्टाचार और मित्रता भरे संदेशों के आदान-प्रदान जैसा लगे, लेकिन असल में ये तीनों देश अपनी-अपनी नीतियों और हितों के अनुसार काम कर रहे हैं। कुछ मुद्दों पर उनके हित आपस में टकराते हैं, जबकि दूसरे मामलों में ये आपसी लेन-देन और समझौता करने को तैयार रहते हैं।

दाऊद इब्राहिम के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस संपत्ति के मालिकाना हक को लेकर कई पक्षों के बीच कानूनी लड़ाई भी चल रही है।

सार्वजनिक धर्मार्थ संस्था के इस अतिथिगृह में सबसे पहले एक पुलिस हेड कांस्टेबल का बेटा किरायेदार के रूप में आया था, लेकिन बाद में वह वहां कब्जा जमाकर बैठ गया। इसी तरह यह इमारत धीरे-धीरे डी-कंपनी का "कार्यालय" बन गई। डी-कंपनी नाम का इस्तेमाल दाऊद इब्राहिम के आपराधिक गिरोह के लिए किया जाता है। दाऊद इब्राहिम कासकर शुरुआत में अपने माता-पिता, हेड कांस्टेबल इब्राहिम कासकर और अमीना बी तथा अपने भाई-बहनों के साथ मुसाफिरखाने की दूसरी मंजिल पर रहता था।

1970 के दशक के अंतिम वर्षों और 1980 के दशक में, जैसे-जैसे मुंबई के अंडरवर्ल्ड में दाऊद इब्राहिम का प्रभाव बढ़ा, उसने पूरी दूसरी मंजिल पर कब्जा कर लिया और किराएदारी का कोई नामोनिशान नहीं बचा। "हाजी इस्माइल हाजी हबीब मुसाफिरखाना" ट्रस्ट की यह इमारत, जो कभी हज यात्रियों के लिए थी, अब उसका घर, दफ्तर और मुख्य मुख्यालय बन गई।

आज तक ऐसा कोई दस्तावेज नहीं मिला है, जो उसे इस जगह का कानूनी हकदार बनाता हो। सरकारी एजेंसियों के आधिकारिक रिकॉर्ड और कानूनी दस्तावेजों से पता चलता है कि न तो दाऊद इब्राहिम और न ही कासकर परिवार के किसी भी सदस्य के पास इस संपत्ति से सम्बन्धित कोई आधिकारिक पंजीकरण या मालिकाना हक का प्रमाण था। यह अपराधिक नैटवर्क पूरी तरह से अवैध कब्ज़े के दम पर पाकमोडिया स्ट्रीट से अपना काम करता था। इमारत के भूतल पर बनी 32 व्यावसायिक दुकानें और ऊपरी मंजिलों पर बने 19 आवासीय मकान नियमित किरायेदारों और दुकानदारों के कब्जे में थे। इस इमारत का इस्तेमाल तस्करी के सामान को रखने के लिए भी किया जाता था।

दाऊद इब्राहिम 1986 में भारत से भाग गया था। उसके बाद भी उसके सहयोगी इस इमारत में सक्रिय रहे। बाद में दूसरी मंजिल पर स्थित कार्यालय उन प्रमुख ठिकानों में से एक बन गया, जहां 1993 में मुंबई में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों की साजिश रची गई थी।

एससीओ के दिल्ली ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पाकिस्तान के साथ जुड़ाव कर सकता है। एससीओ की किसी बैठक में शामिल होने को दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय बातचीत की बहाली या संबंध सामान्य होने के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

दरअसल, भारत लगातार यह स्पष्ट करता रहा है कि आतंकवाद और सामान्य कूटनीतिक संबंध एक साथ पहले की तरह जारी नहीं रह सकते। किसी बहुपक्षीय सम्मेलन की मेजबानी करने से जुड़ी जिम्मेदारियों को निभाने का मतलब यह नहीं है कि भारत को अपने इस रूख में कोई ढील देनी चाहिए। संस्थागत मंच पर जुड़ाव और द्विपक्षीय संबंधों में सुधार के बीच का अंतर इस फैसले को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

इसलिए विपक्ष को सरकार की पाकिस्तान नीति की समीक्षा तो करनी चाहिए, लेकिन हर बहुपक्षीय बातचीत को इस्लामाबाद के सामने झुकने या उसे कुछ रियायत देने के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। विपक्ष का काम है यह मांग करना कि भविष्य में होने वाली किसी भी द्विपक्षीय बातचीत की शर्तें क्या होंगी, सीमा पार आतंकवाद का खतरा कैसे बना हुआ है और सुरक्षा को लेकर सरकार की क्या प्रतिबद्धताएं हैं, इन सब पर स्पष्टता लाई जाए। उसे यह भी समझना चाहिए कि भारत के क्षेत्रीय हितों को किसी एक पड़ोसी देश के साथ संबंधों की भेंट नहीं चढ़ाया जा सकता।

दूसरी ओर, सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इस निमंत्रण को दोनों देशों के संबंधों में किसी बड़ी सफलता के रूप में पेश न किया जाए। उसे स्पष्ट रूप से बताना चाहिए कि यह मंच एससीओ देशों के बीच सभ्यतागत और सांस्कृतिक जुड़ाव के लिए है, न कि पाकिस्तान के साथ राजनीतिक बातचीत फिर से शुरू करने का कोई जरिया।

भारत के सामने कूटनीतिक चुनौती यह है कि वह बहुपक्षीय संस्थाओं में अपनी जगह बनाए रखे और साथ ही राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर अडिग रहे। अपने सिद्धांतों से समझौता किए बिना दूसरे देशों के साथ बातचीत करने की क्षमता रणनीतिक स्वायत्तता का एक महत्वपूर्ण पैमाना है। इस दृष्टिकोण से देखें तो पाकिस्तान को दिया गया निमंत्रण इस्लामाबाद के प्रति सद्भाव दिखाने से अधिक यह सुनिश्चित करने का प्रयास है कि भारत का व्यापक क्षेत्रीय एजेंडा सही दिशा में आगे बढ़ता रहे।

साउथ कश्मीर का बड़ा अंतिम आतंकवादी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हमने उस इलाके की उचित तरीके से घेराबंदी की, जहां लतीफ नाम का एक स्थानीय आतंकवादी मुठभेड़ के दौरान फंसा हुआ था।"

एसएसपी ने बताया कि उन्होंने खुद वीडियो कॉल के जरिए लतीफ भट से बात की और उसे आत्मसमर्पण करने के लिए बार-बार समझाने की कोशिश की।

अली ने कहा, "मैंने खुद उससे वीडियो कॉल पर बात की और अंदर फोन पहुंचाकर काफी देर तक उससे बातचीत हुई। हमने उसे आत्मसमर्पण करने के लिए मनाने की पूरी कोशिश की। हमने उसे समझाया कि वह अभी जवान है और उसका पूरा जीवन उसके सामने पड़ा है। लेकिन वह नहीं माना। वह एक मस्जिद में घुस गया और उसने रात करीब 2:45 बजे गोलीबारी शुरू कर दी।"

उन्होंने बताया कि सुरक्षा बल "स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर" (एस.ओ.पी.) का पालन कर रहे थे और मस्जिद को नुकसान से बचाने के लिए अधिकतम संयम बरता गया।

लतीफ भट को मार गिराना सुरक्षा बलों के लिए एक बड़ी सफलता है। सुरक्षा बल तभी से लतीफ भट की तलाश में थे, जब वह लारू बाईपास इलाके में हुई एक मुठभेड़ के दौरान बच निकला था।

जल जीवन ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लोगों को गिरफ्तार किया गया। जांच के बाद आरोप लगाया गया कि मैसर्स गणपति ट्यूबवैल कंपनी ने फर्जी अनुभव प्रमाण पत्र लगाकर ठेका हासिल किया है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- प्लाट नम्बर H1-4, इन्डस्ट्रीयल एरिया फैस प्रथम, जालौर, (राज.) फोन नम्बर 226422, 226423, जालौर। फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908